गुरु–दिव्य प्रकाश

'गुरु' शब्द भारत में इतना लोकप्रिय है कि सिख धर्म में गुरु के मूल संकल्प को समझने के लिए हमें पहले अपने मन में से गुरु सम्बन्धी प्रचलित विचार को पूरी तरह से निकालना होगा। लोकप्रिय शब्द 'गुरु' कई बार एक ब्राह्मण, एक योगा अध्यापक या एक मार्गदर्शक के लिए प्रयोग में लाये जाने के कारण, गुरु पदवी को इतना सस्ता बना दिया गया है कि एक विद्वान ऐसे गुरुओं को 'दीयों की बाती', जो दीयों के बुझने के बाद बदबू छोड़ने लगती हैं, कह रहा है।

सिख धर्म में गुरु शब्द एक अध्यापक या मार्गदर्शक या विशेषज्ञ या फिर मानव शरीर के लिए भी प्रयोग में नहीं लाया जाता। गुरु शब्द दो पदों से बना है :

गु– अर्थात अंधकार, अंधेरा

और रु –अर्थात प्रकाश, उजाला।

इस तरह सिख धर्म में 'गुरु' शब्द से तात्पर्य है –वह प्रकाश जो सारे अंधेरे को दूर करता है और जिसको 'जोत' (ईश्वरीय प्रकाश अथवा दिव्य प्रकाश) कहा गया है। जब यह सृष्टि अभी बनी नही थी, तब वाहेगुरु निरंकार समाधी में अकेला बैठा था। वही गुरु है जिसे सिख धर्म में गुरु कहा जाता है। हुजूर फरमाते हैं कि गुरु की महिमा मैं क्या कहूँ, गुरु, ज्ञान का सच्चा सरोवर है, वह अनादि काल से परमेश्वर है और भविष्य में भी हमेशा–हमेशा के लिए पूरा परमेश्वर है :

"गुरु की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सतसरु।
ओहु आदि जुगादि जुगह जुगु पूरा परमेसरु।"

(आसा महल्ला 5 अ, पृष्ठ 397)

गुरु केवल पारब्रह्म परमेश्वर आप ही है। दूसरा कोई नहीं। ऐसे गुरु को आठों पहर जप :

"गुरु पारब्रह्मु परमेसरु आपि। आठ पहर नानक गुरु जापि।"

(आसा, महल्ला 5, पन्ना 387)

फिर फरमाया है कि गुरु केवल निरंकार सर्व–समर्थ है। वह मन बुद्धि से परे है। ऐसे गुरु की महिमा अगम है। कोई कथनहार क्या कह सकता है :

"गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु।
गुरु की महिमा अगम है, किआ कथे कथनहारु।"

(सिरी रागु महल्ला 5 पृष्ठ 52)

"गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोई।"

(श्लोक महल्ला 1 पृष्ठ 137)

गुरु दाता है। गुरु 'सहज' का घर है। गुरु ज्योति है जो तीन लोकों में प्रकाशमान हो रही है। जिसे त्रिलोक या तीन दुनिया कहा है, वह कहाँ है? एक दुनिया है जो हमारे से ऊपर है, असंख्य फासले पर, दूसरी दुनिया हमारी सत्ता और तीसरी दुनिया हमसे नीचे अनन्त रास्ते पर। गुरु एक ज्योति है जो तीनों लोकों में प्रकाशमान हो रही है। वह प्रकाश रूप ज्योति :

"जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहाबउ।"

(सवैये महल्ले पाँचवे के पृष्ठ 1408)

सो, गुरु नानक जी ईश्वरीय प्रकाश का दैहिक रूप थे।

"गुर नानक देव गोविंद रूप।"

(बसंत महल्ला 5, पृष्ठ 1192)

सिख धर्म में गुरु एक सम्पन्न पैगम्बर या अकाल पुरुख का संदेश देने वाले थे, जिनमें ईश्वरीय प्रकाश सारे का सारा और पूर्ण तौर पर छलकता था। गुरु अकाल पुरुख से जुड़ा होता है। इस प्रकार वह श्रद्धालुओं और सत्य की खोज करने वालों को आध्यात्मिक जन्म की ओर मोड़ देता है। उसके द्वारा अकाल पुरुख की महिमा मनुष्य जाति में प्रवेश करती है। उसके दैवी अधिकारों के कारण गुरु, बेशक मनुष्य–शरीर में है, पर वह ईश्वरीय आत्मा है।

असल में, गुरु नानक जी का शरीर एक मंच (प्लेटफार्म) था, जिस पर अकाल पुरुष ने स्वयं बोलकर अपना संदेश – गुरबाणी– प्रदान किया। अकाल पुरुख गुरु नानक जी द्वारा स्वयं प्रकट हुआ।

"गुर महि आपु समोइ शबदु वरताइया।"

(वार मलार महल्ला 1, पृष्ठ 1279)

गुरबाणी का एक और महावाक्य है –

"गुर महि आपु रखिया करतारे।"

(मारू महल्ला 1(15), पृष्ठ 1024)

अकाल पुरुख गुरु में बसता है और गुरु अकाल पुरुख में। यद्यपि अकाल पुरुख सब ओर और सारे जीवों में समाया हुआ है, पर उसके गुण गुरु द्वारा ही प्रकाशमान होते हैं। सो, गुरु नानक जी के शरीर में जो ज्योति समाई हुई थी, वह ज्योति और अकाल पुरुख की परम ज्योति, दोनों एक ही ज्याति थीं।

"गुरु नानकु नानकु हरि सोई।"

(गौड़ महल्ला 5, पृष्ठ 865)

फिर, जनम–साखियाँ बताती हैं कि अकाल पुरुख ने गुरु नानक जी के साथ वचन किया और कहा –

"मैं आदि परमेसर और तू गुरु परमेसर।"

गुरु नानक जी ने कभी यह दावा नहीं किया कि मेरे श्रद्धालु या अनुयायी ही मुक्ति पा सकते हैं या स्वर्ग में जा सकते हैं। क्योंकि वे ईश्वरीय प्रकाश का स्वरूप थे और ईश्वरीय प्रकाश किसी एक खास फिरके या धर्म की जागीर नहीं होता। सो, गुरु जी समस्त मनुष्य जाति के लिए प्रकाश देते हैं और कहते हैं कि जो भी एक निरंकार अकाल पुरुख का सुमिरन करेगा, वह मुक्ति पायेगा।

"जो जो जपै सु होइ पुनीत।
भगति भाइ लावै मन हीत।"

(गउड़ी सुखमनी महल्ला 5, पृष्ठ 290)

जब गुरु नानक जी ने गुरगद्दी भाई लहिणा जी (जो तब गुरु अंगद कहलाये) को सौंपी, उनकी ज्योति गुरु अंगद जी में आ मिली और वह भी ईश्वरीय प्रकाश का स्वरूप हो गये। उस समय, सबसे पहले गुरु नानक ने गुरु अंगद जी के सम्मुख अपना माथा टेका। गुरु साहिब ने माथा किसको टेका ? माथा गुरु अंगद देव जी के शरीर को नहीं टेका, क्योंकि वह शरीर तो हुजूर के साथ भाई लहिणा जी के तौर पर हर समय रहता था। पहले कभी शीश नहीं झुकाया, पर आज गुरु नानक जी ने माथा क्यों टेका ? क्योंकि आज उस घर में गुरु (ज्योति) जा बैठा। माथा 'गुरु–ज्योति' को टेका है जो गुरु नानक देव जी ने अपनी इलाही पावर (ईश्वरीय शक्ति) से प्रकाशमान की। इसी तरह, गुरु नानक जी के बाद के सभी नौ गुरु, गुरु नानक ज्योति **१** का स्वरूप थे। फिर, दसवें पातशाह गुरु गोबिंद सिंह जी ने गुरगद्दी, आदि–ग्रंथ साहिब को सौंपी और यह भी ईश्वरीय प्रकाश का स्वरूप हो गये। तब दसवें पातशाह ने गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मुख स्वयं माथा टेका। सो, हम एक किताब को या ग्रंथ को माथा नहीं टेकते। माथा 'गुरु' को टेकते हैं। गुरु एक इलाही ज्योति है जिसे दसवें पातशाह ने अपनी ईश्वरीय शक्ति से गुरु ग्रंथ साहिब में प्रकाशमान किया। सो, गुरु नानक ज्योति गुरु ग्रंथ साहिब में स्थापित और सुरक्षित की हुई है (यह अब आदि ग्रंथ नहीं, गुरु ग्रंथ साहिब हैं) और यह सदा के लिए जीवित गुरु हैं। **सिखों के लिए गुरु ग्रंथ साहिब गुरु–ज्योति का साक्षात् रूप है और इसके द्वारा गुरु नानक देव जी सिख धर्म में जीवित हैं।**

सिख धर्म मनुष्य की आत्मा को माया (पदार्थवाद) में से ऊपर उठाता है। इसका मंतव्य शुभ गुणों वाला जीवन है जो अंत में अनादि आनन्द की अवस्था की प्राप्ति की ओर ले जाता है। गुरु नानक जी के गुरुता का उद्देश्य सच्चे नाम की शिक्षा देना, मनुष्य जाति को सांसारिक जीवन में से उपजे दुःख, क्लेश और संताप में डूबने से बचाना और मनुष्य आत्माओं को इनके रचयिता अकाल पुरुख में मिलाना और इस तरह उनको दुःखों के सारे बंधन और जाल तोड़कर आवागमन के चक्कर से मुक्ति दिलाना था। सिख धर्म का यही एक मूल विशेष गुण है।

कर्मों और भाग्यवाद का विधान सिख धर्म के विरुद्ध है क्योंकि यह सर्व–शक्तिमान अकाल–पुरुख के दयालु गुण से मेल नहीं खाता। सिख धर्म में प्रतिशोधपूर्ण ईश्वर द्वारा बनाया गया चिरंतन नरकवास या

स्थायी अग्निकुंड जैसी कोई चीज नहीं है। गुरु की मेहर(कृपा) भूतकाल और वर्तमान में किये गये हजारों बुरे कर्मों के दाग को मिटा देती है। यह भविष्य में भी रक्षा करती है। **'नाम' का सुमिरन अनगिनत पापों का नाश करता है। अकाल–पुरुख की इलाही बाणी के द्वारा की गई पूजा–स्तुति एक पछताते हुए पापी को मुक्ति प्रदान कर सकती है और इस तरह कर्मों का सिद्धान्त लागू नहीं होता। गुरु नानक जी के** अकाल पुरुख की मेहर और कृपा के सिद्धान्त का यही प्रताप है।